Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

शालेय वातावरण के विभिन्न आयामों का विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव: बस्तर जिले का अध्ययन

डॉ. हेमलता नागेश

सहायक प्राध्यापक

सूर्या कॉलेज, जगदलपुर, बस्तर, छत्तीसगढ़

प्रस्तावना

विद्यालय विद्यार्थियों के जीवन का वह सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिसर है, जहाँ न केवल शैक्षिक उपलब्धियाँ निर्मित होती हैं, बल्कि व्यक्तित्व के मूल गुण, मूल्य, दृष्टिकोण और व्यवहारिक क्षमताएँ विकसित होती हैं। शालेय वातावरण जिसमें कक्षा-अंतःक्रिया, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, विद्यालयीय अनुशासन, अधिगम संसाधन, सह-पाठ्य गतिविधियाँ, सुरक्षा एवं भावनात्मक समर्थन जैसी विशेषताएँ शामिल हैं विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति (Educational Attitude) और व्यक्तित्व निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाता है।

बस्तर जिला, जो जनजातीय बहुल, भौगोलिक रूप से चुनौतीपूर्ण और सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता से युक्त है, वहाँ विद्यालयी संसाधनों और वातावरण की गुणवत्ता विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रेरणा, आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल तथा व्यक्तित्व विकास को विशेष रूप से प्रभावित करती है। अतः इस अध्ययन का उद्देश्य बस्तर जिले के विद्यार्थियों में शालेय वातावरण के प्रमुख आयामों का शैक्षिक अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का विश्लेषण करना है।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

इस शोध की आधारभूमि निम्न सिद्धांतों पर आधारित है—

(i) ब्रॉनफेनब्रेनर का पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत (Ecological Systems Theory)- विद्यालय माइक्रो-सिस्टम का महत्वपूर्ण भाग है, जो विद्यार्थियों के प्रत्यक्ष अनुभवों, अन्तःक्रियाओं और सामाजिक संबंधों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व और दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।

(ii) सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Bandura's Social Learning Theory)- विद्यार्थी अपने परिवेश, शिक्षकों और साथियों से अनुकरण एवं प्रेक्षण के माध्यम से सीखते हैं। सकारात्मक विद्यालयी वातावरण उचित अधिगम व्यवहार और आत्म-विश्वास को प्रोत्साहित करता है।

(iii) प्रगतिवादी शिक्षा दर्शन (Progressivism)- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व विकास और वास्तविक जीवन कौशल को बढ़ावा देना है। विद्यालयीय वातावरण को सक्रिय, लोकतांत्रिक और अन्वेषणशील बनाना आवश्यक है।

इन सभी सिद्धांतों का सार यह है कि शालेय वातावरण की गुणवत्ता विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख निर्धारक है।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

अध्ययन का महत्व

1. **जनजातीय क्षेत्र विशेष का अध्ययन:** बस्तर जिले के विद्यार्थियों की विशिष्ट समस्याओं और आवश्यकताओं को समझने में उपयोगी।
2. **शिक्षा-नीति उपयोगिता:** अध्ययन के परिणाम NEP-2020 के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और बाल-केन्द्रित विद्यालयी वातावरण के निर्माण में सहायक होंगे।
3. **विद्यालय प्रबंधन के लिए मार्गदर्शन:** शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, अधिगम माहौल, संसाधनों की उपलब्धता इत्यादि में सुधार हेतु ठोस सुझाव मिलेंगे।
4. **व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा:** सकारात्मक शालेय वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल और रचनात्मकता को बढ़ाता है।
5. **स्थानीय शैक्षिक शोध के लिए योगदान:** यह अध्ययन बस्तर क्षेत्र में विद्यालयी वातावरण से संबंधित अनुसंधान के अभाव को पूरा करेगा।

समस्या का विवरण (Statement of the Problem)

यह अध्ययन इस समस्या की जाँच करता है कि बस्तर जिले में शालेय वातावरण के विभिन्न आयाम विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति और व्यक्तित्व विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से यह जानना आवश्यक है कि संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षण-शैली, कक्षा-अंतःक्रिया, अनुशासन, सुरक्षा, सह-पाठ्य गतिविधियाँ और सामाजिक समर्थन जैसे घटक छात्रों के शैक्षिक दृष्टिकोण और व्यक्तित्व-विकास पर कितना प्रभाव डालते हैं।

प्रमुख शब्दों की प्रकार्यात्मक परिभाषाएँ (Operational Definitions)

- **शालेय वातावरण:** विद्यालय की भौतिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ जैसे बुनियादी संसाधन, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, अनुशासन, सुरक्षा, गतिविधियाँ, और अधिगम संस्कृति।
- **शैक्षिक अभिवृत्ति:** विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, प्रेरणा, रुचि, आत्मविश्वास एवं शैक्षणिक जिम्मेदारी की भावना।
- **व्यक्तित्व विकास:** सामाजिक कौशल, आत्म-सम्मान, अनुशासन, संप्रेषण क्षमता, भावनात्मक संतुलन और नेतृत्व क्षमता में प्रगति।
- **विद्यार्थी:** बस्तर जिले के कक्षा 9 से 12 के अध्ययनरत छात्र-छात्राएँ।

चर (Variables)

स्वतंत्र चर (Independent Variable): शालेय वातावरण के विभिन्न आयाम (जैसे संसाधन, शिक्षक व्यवहार, अनुशासन, कक्षा अंतःक्रिया, भावनात्मक समर्थन आदि)

परतंत्र चर (Dependent Variables): विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति, विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

1. बस्तर जिले के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति के स्तर का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के स्तर का आकलन करना।
3. शालेय वातावरण के विभिन्न आयामों को मापना और विश्लेषित करना।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

4. शालेय वातावरण का शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव ज्ञात करना।
5. शालेय वातावरण का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव ज्ञात करना।
6. विभिन्न जनसांख्यिकीय कारकों (लिंग, विद्यालय का प्रकार, ग्रामीण/शहरी क्षेत्र) के आधार पर अंतर का विश्लेषण करना।

शोध प्रश्न (Research Questions)

1. बस्तर जिले के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का स्तर क्या है?
2. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का स्तर क्या है?
3. शालेय वातावरण के प्रमुख आयाम कौन-कौन से हैं?
4. क्या शालेय वातावरण शैक्षिक अभिवृत्ति को प्रभावित करता है?
5. क्या शालेय वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में योगदान देता है?
6. क्या विभिन्न समूहों में (लिंग/क्षेत्र/विद्यालय-प्रकार) कोई महत्वपूर्ण अंतर है?

अध्ययन की परिधि (Scope)

अध्ययन कक्षा 9–12 के विद्यार्थियों तक सीमित है तथा केवल बस्तर जिले के सरकारी एवं निजी विद्यालयों को शामिल करता है। अध्ययन केवल शालेय वातावरण, शैक्षिक अभिवृत्ति और व्यक्तित्व विकास तक सीमित रहेगा।

सीमाएँ एवं परिसीमाएँ (Delimitations)

- अध्ययन केवल एक जिले (बस्तर) तक सीमित।
- केवल विद्यालयी स्तर (Secondary/Senior Secondary) के विद्यार्थियों का चयन।
- केवल स्व-रिपोर्ट प्रश्नावली के माध्यम से डेटा संग्रह।
- समय एवं संसाधन की सीमाओं के कारण नमूना आकार सीमित।

संबंधित पूर्व शोध

1. **Fraser (1986)** ने विद्यालयी वातावरण को शैक्षणिक उपलब्धि और प्रेरणा का प्रमुख निर्धारक माना।
2. **Moos & Trickett (1987)** ने पाया कि सकारात्मक कक्षा-पर्यावरण विद्यार्थियों की भावनात्मक सुरक्षा और सहभागिता को बढ़ाता है।
3. **Klem & Connell (2004)** ने शिक्षक-विद्यार्थी संबंध का विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं अधिगम-प्रयास पर प्रभाव साबित किया।
4. **Shukla (2017)** के भारतीय अध्ययन में विद्यालय संसाधन और अनुशासन का छात्रों के व्यक्तित्व-विकास से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।
5. **Nayak (2020)** ने जनजातीय क्षेत्रों में विद्यालयी वातावरण का शैक्षिक दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव दिखाया।

शोध-अंतर (Research Gap)

जनजातीय क्षेत्र विशेष विशेष रूप से बस्तर जिला में शालेय वातावरण को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास तथा शैक्षिक अभिवृत्ति से जोड़कर देखने वाले अध्ययन अत्यंत सीमित हैं। उपलब्ध शोध ज्यादातर शैक्षणिक उपलब्धि पर केंद्रित रहे हैं। अतः यह अध्ययन क्षेत्रीय और शोध-व्यावहारिक अंतर को भरता है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

(i) शोध रूपरेखा (Research Design): वर्णनात्मक एवं सहसंबन्धात्मक (Descriptive–Correlational Study)

(ii) जनसंख्या (Population): बस्तर जिले के कक्षा 9–12 के सभी विद्यार्थी

(iii) नमूना (Sample): लगभग 300 विद्यार्थी (सरकारी + निजी विद्यालयों से)

(iv) नमूना विधि (Sampling Method): स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना चयन (Stratified Random Sampling)

(v) डेटा का स्रोत (Source of Data): प्राथमिक डेटा – प्रश्नावली द्वारा द्वितीयक डेटा – विद्यालयी अभिलेख, पूर्व शोध, रिपोर्ट

शोध उपकरण (Research Tools)

1. School Environment Scale (Self-developed or standardized)
2. Educational Attitude Scale
3. Personality Development Inventory
4. जनसांख्यिकीय सूचना प्रपत्र

आँकड़ों के संग्रह प्रक्रिया (Data Collection Procedure)

- नमूना विद्यालयों का चयन
- छात्रों को प्रश्नावली का वितरण
- आवश्यक निर्देश देकर उत्तर एकत्रित करना
- विद्यालयी वातावरण से संबंधित शिक्षक एवं प्रधानाध्यापकों से पूरक जानकारी लेना

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis)

- औसत (Mean), माध्यिका, मानक विचलन
- सहसंबंध (Correlation)
- t-test / ANOVA (समूह तुलना के लिए)
- रिग्रेशन विश्लेषण (प्रभाव ज्ञात करने हेतु)

अध्ययन की मुख्य निष्कर्ष (Expected Findings)

1. अनुकूल एवं समर्थकारी शालेय वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति को बढ़ाता है।
2. सकारात्मक वातावरण वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व, सामाजिक कौशल अधिक विकसित पाया जाता है।
3. शिक्षक का व्यवहार, कक्षा-अंतःक्रिया और सह-पाठ्य गतिविधियाँ व्यक्तित्व-विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।
4. संसाधन-सम्पन्न विद्यालयों में शैक्षिक अभिवृत्ति का स्तर अधिक पाया जाता है।
5. जनजातीय क्षेत्रों में विद्यालयी वातावरण को सुधारने से सीधे तौर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं दृष्टिकोण में सुधार देखा जा सकता है।

सारांश

अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि शालेय वातावरण का छात्रों के शैक्षिक दृष्टिकोण और व्यक्तित्व-निर्माण पर गहरा प्रभाव पड़ता है, विशेषकर बस्तर जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से विविध जिले में।

निष्कर्ष

सकारात्मक, सुरक्षित, संसाधन-सम्पन्न और सहयोगी वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सामाजिक क्षमता और शैक्षिक प्रेरणा को मजबूत करता है।

सुझाव

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

- विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाई जाए।
- शिक्षक-विद्यार्थी संबंध सुदृढ़ किए जाएँ।
- जनजातीय विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील अधिगम सामग्री विकसित की जाए।
- सह-पाठ्य गतिविधियों का विस्तार किया जाए।
- सुरक्षित और भावनात्मक रूप से सहयोगी कक्षा-पर्यावरण सुनिश्चित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- *Fraser, B. J. (1986). Classroom environment. London: Croom Helm.*
- *Klem, A. M., & Connell, J. P. (2004). Relationships matter: Linking teacher support to student engagement. Journal of School Health, 74(7), 262–273.*
- *Moos, R. H., & Trickett, E. J. (1987). Classroom environment scale manual. Palo Alto, CA: Consulting Psychologists Press.*
- *Nayak, A. (2020). School environment and educational attitude of tribal students in India. Journal of Tribal Education, 9(2), 45–56.*
- *Shukla, R. (2017). Impact of school climate on personality development among secondary students. Indian Journal of Psychology, 52(4), 120–130.*